श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

कपिल गीता अध्याय(3.30)



वर्णन करने सांख्य योग का, और देने को ज्ञान ।
गुरु रूप में कपिल मुनि थे, देवहूति शिष्य समान।

नारायणं(न्) नमस्कृत्य, नरं(ञ्) चैव नरोत्तमम्।
देवीं(म्) सरस्वतीं(वँ) व्यासं(न्), ततो जयमुदीरयेत्

नामसङ्कीर्तनं(यँ) यस्य, सर्वपापप्रणाशनम्।
प्रणामो दुःखशमनस्, तं(न्) नमामि हरिं(म्) परम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
तृतीयं स्कंधः
॥ अथ त्रिं(म्)शोऽध्यायः ॥

कपिल उवाच

तस्यैतस्य जनो नूनं(न्), नायं(वँ) वेदोरुविक्रमम् ।
काल्यमानोऽपि बलिनो, वायोरिव घनावलिः ॥ 1॥

श्रीकपिलदेवजी कहते हैं-माताजी! जिस प्रकार वायुके द्वारा उड़ाया जानेवाला मेघसमूह उसके बलको नहीं जानता, उसी प्रकार यह जीव भी बलवान् कालकी प्रेरणासे भिन्न-भिन्न अवस्थाओं तथा योनियोंमें भ्रमण करता रहता है, किन्तु उसके प्रबल पराक्रमको नहीं जानता ।

यं(यँ) यमर्थमुपादत्ते, दुःखेन सुखहेतवे ।
तं(न्) तं(न्) धुनोति भगवान्, पुमाञ्छोचति यत्कृते ॥ 2॥

जीव सुखकी अभिलाषासे जिस-जिस वस्तुको बड़े कष्टसे प्राप्त करता है, उसी उसीको भगवान् काल विनष्ट कर देता है—जिसके लिये उसे बड़ा शोक होता है ।

यदध्रुवस्य देहस्य, सानुबन्धस्य दुर्मतिः ।
ध्रुवाणि मन्यते मोहाद्- गृहक्षेत्रवसूनि च ॥ 3॥

इसका कारण यही है कि यह मन्दमति जीव अपने इस नाशवान् शरीर तथा उसके सम्बन्धियोंके घर, खेत और धन आदिको मोहवश नित्य मान लेता है।

जन्तुर्वै भव एतस्मिन्, यां(यँ) यां(यँ) योनिमनुव्रजेत् ।
तस्यां(न्) तस्यां(म्) स लभते, निर्वृतिं(न्) न विरज्यते ॥ 4॥

इस संसारमें यह जीव जिस-जिस योनिमें जन्म लेता है, उसी उसीमें आनन्द मानने लगता है और उससे विरक्त नहीं होता।

नरकस्थोऽपि देहं(वँ) वै, न पुमां(म्)स्त्यक्तुमिच्छति ।
नारक्यां(न्) निर्वृतौ सत्यां(न्), देवमायाविमोहितः ॥ 5॥

यह भगवान् की मायासे ऐसा मोहित हो रहा है कि कर्मवश नारकी योनियोंमें जन्म लेनेपर भी वहाँके विष्ठा आदि भोगोंमें ही सुख माननेके कारण उसे भी छोड़ना नहीं चाहता।

आत्मजायासुतागार-पशुद्रविणबन्धुषु ।
निरूढमूलहृदय, आत्मानं(म्) बहु मन्यते ॥ 6॥

यह मूर्ख अपने शरीर, स्त्री, पुत्र, गृह, पशु, धन और बन्धु बान्धवोंमें अत्यन्त आसक्त होकर उनके सम्बन्धमें नाना प्रकारके मनोरथ करता हुआ अपनेको बड़ा भाग्यशाली समझता है।

सन्दह्यमानसर्वाङ्ग, एषामुद्वहनाधिना ।
करोत्यविरतं(म्) मूढो, दुरितानि दुराशयः ॥ 7॥

इनके पालन पोषणकी चिन्तासे इसके सम्पूर्ण अङ्ग जलते रहते हैं; तथापि दुर्वासनाओंसे दूषित हृदय होनेके कारण यह मूढ़ निरन्तर इन्होंके लिये तरह-तरहके पाप करता रहता है।

आक्षिप्तात्मेन्द्रियः(स्) स्त्रीणा-मसतीनां(ञ्) च मायया ।
रहो रचितयाऽऽलापैः(श्), शिशूनां(ङ्) कलभाषिणाम् ॥ 8॥
गृहेषु कूटधर्मेषु, दुःखतन्त्रेष्वतन्द्रितः ।
कुर्वन् दुःखप्रतीकारं(म्), सुखवन्मन्यते गृही ॥ 9॥

कुलटा स्त्रियोंके द्वारा एकान्तमें सम्भोगादिके समय प्रदर्शित किये हुए कपटपूर्ण प्रेममें तथा बालकों की मीठी-मीठी बातों में मन और इन्द्रियोंके फँस जानेसे गृहस्थ पुरुष घरके दुःख-प्रधान कपटपूर्ण कमंग लिए हो जाता है। उस समय बहुत सावधानी करनेपर यदि उसे किसी दुःखका प्रतीकार करने में सफलता मिल जाती है, तो उसे ही वह सुख-सा मान लेता है ।

अर्थैरापादितैर्गुर्व्या, हिं(म्)सयेतस्ततश्च तान् ।

पुष्णाति येषां(म्) पोषेण, शेषभुग्यात्यधः(स्) स्वयम् ॥ 10॥

जहाँ-तहाँ से भयङ्कर हिंसावृत्तिके द्वारा धन सञ्चयकर यह ऐसे लोगोंका पोषण करता है, जिनके पोषणसे नरकमें जाता है। स्वयं तो उनके खाने-पीनेसे बचे हुए अन्नको ही खाकर रहता है।

वार्तायां(लँ) लुप्यमानाया- मार्रब्धायां(म्) पुनः(फ्) पुनः ।

लोभाभिभूतो निः(स्)सत्त्वः(फ्), परार्थे कुरुते स्पृहाम् ॥ 11॥

बार-बार प्रयत्न करनेपर भी जब इसकी कोई जीविका नहीं चलती, तो यह लोभवश अधीर हो जानेसे दूसरेके धनकी इच्छा करने लगता है।

कुटुम्बभरणाकल्पो, मन्दभाग्यो वृथोद्यमः ।

श्रिया विहीनः(ख्) कृपणो, ध्यायञ्छ्वसिति मूढधीः ॥ 12॥

जब मन्दभाग्यके कारण इसका कोई प्रयत्न नहीं चलता और यह मन्दबुद्धि धनहीन होकर कुटुम्बके भरण-पोषणमे असमर्थ हो जाता है, तब अत्यन्त दीन और चिन्तातुर होकर लंबी-लंबी साँस छोड़ने लगता है।

एवं(म्) स्वभरणाकल्पं(न्), तत्कलत्रादयस्तथा ।

नाद्रियन्ते यथा पूर्वं(ङ्), कीनाशा इव गोजरम् ॥ 13॥

इसे अपने पालन पोषणमें असमर्थ देखकर वे स्त्री पुत्रादि इसका पहलेके समान आदर नहीं करते, जैसे कृपण किसान बूढ़े बैलकी उपेक्षा कर देते हैं।

तत्राप्यजातनिर्वेदो, म्रियमाणः(स्) स्वयम्भृतैः ।

जरयोपात्तवैरूप्यो, मरणाभिमुखो गृहे ॥ 14॥

आस्तेऽवमत्योपन्यस्तं(ङ्), गृहपाल इवाहरन् ।

आमयाव्यप्रदीप्ताग्नि- रल्पाहारोऽल्पचेष्टितः ॥ 15॥

फिर भी इसे वैराग्य नहीं होता। जिन्हें उसने स्वयं पाला था, वे ही अब उसका पालन करते हैं, वृद्धावस्थाके कारण इसका रूप बिगड़ जाता है, शरीर रोगी हो जाता है, अग्नि मन्द पड़ जाती है, भोजन और पुरुषार्थ दोनों ही कम हो जाते हैं। वह मरणोन्मुख होकर घरमें पड़ा रहता है और कुत्तेकी भाँति स्त्री-पुत्रादिके अपमानपूर्वक दिये हुए टुकड़े खाकर जीवन-निर्वाह करता है।

वायुनोत्क्रमतोत्तारः(ख्), कफसं(म्)रुद्धनाडिकः ।

कासश्वासकृतायासः(ख्), कण्ठे घुरघुरायते ॥ 16॥

मृत्युका समय निकट आनेपर वायुके उत्क्रमणसे इसकी पुतलियाँ चढ़ जाती है, श्वास-प्रश्वासकी नलिकाएँ कफसे रुक जाती हैं, खांसने और सांस लेने में भी इसे बड़ा कष्ट होता है तथा कफ बढ़ जानेके कारण कण्ठमे घुरघुराहट होने लगती है।

शयानः(फ्) परिशोचद्भिः(फ्), परिवीतः(स्) स्वबन्धुभिः ।

वाच्यमानोऽपि न ब्रूते, कालपाशवशं(ङ्) गतः ॥ 17॥

यह अपने शोकातुर बन्धुबान्धवों से घिरा हुआ पड़ा रहता है और मृत्युपाशके वशीभूत हो जानेसे उनके बुलानेपर भी नहीं बोल सकता।

एवं(ङ्) कुटुम्बभरणे, व्यापृतात्माजितेन्द्रियः ।

म्रियते रुदतां(म्) स्वाना- मुरुवेदनयास्तधीः ॥ 18॥

इस प्रकार जो मूढ़ पुरुष इन्द्रियोंको न जीतकर निरन्तर कुटुम्ब-पोषण में ही लगा रहता है, वह रोते हुए स्वजनोंके बीच अत्यन्त वेदनासे अचेत होकर मृत्युको प्राप्त होता है।

यमदूतौ तदा प्राप्तौ, भीमौ सरभसेक्षणौ ।

स दृष्ट्वा त्रस्तहृदयः(श्), शकृन्मूत्रं(वँ) विमुञ्चति ॥ 19॥

इस अवसरपर उसे लेनेके लिये अति भयङ्कर और रोषयुक्त नेत्रोंवाले जो दो यमदूत आते हैं, उन्हें देखकर वह भयके कारण मल-मूत्र कर देता है।

यातनादेह आवृत्य, पाशैर्बद्ध्वा गले बलात् ।

नयतो दीर्घमध्वानं(न्), दण्ड्यं(म्) राजभटा यथा ॥ 20॥

वे यमदूत उसे यातनादेहमें डाल देते हैंऔर फिर जिस प्रकार सिपाही किसी अपराधीको ले जाते हैं, उसी प्रकार उसके गलेमें रस्सी बांधकर बलात् यमलोककी लंबी यात्रामें उसे ले जाते हैं।

तयोर्निर्भिन्नहृदयस्- तर्जनैर्जातवेपथुः ।

पथि श्वभिर्भक्ष्यमाण, आर्तोऽघं(म्) स्वमनुस्मरन् ॥ 21॥

उनकी घुड़कियोंसे उसका हृदय फटने और शरीर काँपने लगता है, मार्गमे उसे कुत्ते नोचते हैं। उस समय अपने पापोंको याद करके वह व्याकुल हो उठता है।

क्षुत्तृट्परीतोऽर्कदवानलानिलैः(स्),

सन्तप्यमानः(फ्) पथि तप्तवालुके ।

कृच्छ्रेण पृष्ठे कशया च ताडितः(श्)-

चलत्यशक्तोऽपि निराश्रमोदके ॥ 22॥

भूख-प्यास उसे बेचैन कर देती है तथा घाम, दावानल और लूओंसे वह तप जाता है। ऐसी अवस्थामें जल और विश्राम स्थानसे रहित उस तप्तबालुकामय मार्गमें जब उसे एक पग आगे बढ़नेकी भी शक्ति नहीं रहती, यमदूत उसकी पीठपर कोड़े बरसाते हैं, तब बड़े कष्टसे उसे चलना ही पड़ता है।

तत्र तत्र पतञ्छ्रान्तो, मूर्च्छितः(फ्) पुनरुत्थितः ।

पथा पापीयसा नीतस्-तमसा यमसादनम् ॥ 23॥

वह जहाँ-तहाँ थककर गिर जाता है, मूर्छा आ जाती है, चेतना आनेपर फिर उठता है। इस प्रकार अति दुःखमय अँधेरे मार्गसे अत्यन्त क्रूर यमदूत उसे शीघ्रतासे यमपुरीको ले जाते हैं।

योजनानां(म्) सहस्राणि, नवतिं(न्) नव चाध्वनः ।

त्रिभिर्मुहूर्तैर्द्वाभ्यां(वँ) वा, नीतः(फ्) प्राप्नोति यातनाः ॥ 24॥

यमलोकका मार्ग निन्यानबे हजार योजन है इतने लम्बे मार्गको दो-ही-तीन मुहूर्त करके वह नरकमें तरह-तरहकी यातनाएँ भोगता है।

आदीपनं(म्) स्वगात्राणां(वँ), वेष्टयित्वोल्मुकादिभिः ।

आत्ममां(म्)सादनं(ङ्) क्वापि, स्वकृत्तं(म्) परतोऽपि वा ॥ 25॥

वहाँ उसके शरीरको धधकती लकड़ियों आदिके बीचमें डालकर जलाया जाता है, कहीं स्वयं और दूसरोंके द्वारा काट-काटकर उसे अपना ही मांस खिलाया जाता है।

जीवतश्चान्त्राभ्युद्धारः(श्), श्वगृध्रैर्यमसादने ।

सर्पवृश्चिकदं(म्)शाद्यैर्- दशद्भिश्चात्मवैशसम् ॥ 26॥

यमपुरीके कुत्तों अथवा गिद्धोंद्वारा जीते-जी उसकी आँतें खींची जाती हैं। साँप, बिच्छू और डाँस आदि दसनेवाले तथा डंक मारनेवाले जीवोंसे शरीरको पीड़ा पहुँचायी जाती है।

कृन्तनं(ञ्) चावयवशो, गजादिभ्यो भिदापनम् ।

पातनं(ङ्) गिरिशृङ्गेभ्यो, रोधनं(ञ्) चाम्बुगर्तयोः ॥ 27॥

शरीरको काटकर टुकड़े-टुकड़े किये जाते हैं। उसे हाथियोंसे चिरवाया जाता है, पर्वतशिखरोंसे गिराया जाता है अथवा जल या गढ़ेमें डालकर बन्द कर दिया जाता है।

यास्तामिस्रान्धतामिस्रा, रौरवाद्याश्च यातनाः ।

भुङ्क्ते नरो वा नारी वा, मिथः(स्) सङ्गेन निर्मिताः ॥ 28॥

ये सब यातनाएँ तथा इसी प्रकार तामिस्र, अन्धतामिस्र एवं रौरव आदि नरकों की और भी अनेकों यन्त्रणाएँ, स्त्री हो या पुरुष, उस जीवको पारस्परिक संसर्गसे होनेवाले पापके कारण भोगनी ही पड़ती है।

अत्रैव नरकः(स्) स्वर्ग, इति मातः(फ्) प्रचक्षते ।

या यातना वै नारक्य-स्ता इहाप्युपलक्षिताः ॥ 29॥

माताजी कुछ लोगो का कहना है कि स्वर्ग और नरक तो इसी लोकमें हैं, क्योंकि जो नारकी यातनाएं है, वे यहाँ भी देखी जाती है।

एवं(ङ्) कुटुम्बं(म्) बिभ्राण, उदरम्भर एव वा ।

विसृज्येहोभयं(म्) प्रेत्य, भुङ्क्ते तत्फलमीदृशम् ॥ 30॥

इस प्रकार अनेक कष्ट भोगकर अपने कुटुम्ब का ही पालन करनेवाला अथवा केवल अपना ही पेट भरनेवाला पुरुष उन कुटुम्ब और शरीर-दोनोंको यहीं छोड़कर मरनेके बाद अपने किये हुए पापोंका ऐसा फल भोगता है।

एकः(फ्) प्रपद्यते ध्वान्तं(म्), हित्वेदं(म्) स्वकलेवरम् ।

कुशलेतरपाथेयो, भूतद्रोहेण यद्भृतम् ॥ 31॥

अपने इस शरीरको यहीं छोड़कर प्राणियोंसे द्रोह करके एकत्रित किये हुए पापरूप पाथेयको साथ लेकर वह अकेला ही नरकमें जाता है।

दैवेनासादितं(न्) तस्य, शमलं(न्) निरये पुमान् ।

भुङ्क्ते कुटुम्बपोषस्य, हृतवित्त इवातुरः ॥ 32॥

मनुष्य अपने कुटुम्बका पेट पालनेमें जो अन्याय करता है, उसका दैवविहित कुफल वह नरकमें जाकर भोगता है। उस समय वह ऐसा व्याकुल होता है, मानो उसका सर्वस्व लुट गया हो।

केवलेन ह्यधर्मेण, कुटुम्बभरणोत्सुकः ।

याति जीवोऽन्धतामिस्रं(ञ्), चरमं(न्) तमसः(फ्) पदम् ॥ 33॥

जो पुरुष निरी पापकी कमाईसे ही अपने परिवारका पालन करनेमें व्यस्त रहता है, वह अन्धतामिस्र नरकमें जाता है— जो नरकों में चरम सीमाका कष्टप्रद स्थान है।

अधस्तान्नरलोकस्य, यावतीर्यातनादयः ।

क्रमशः(स्) समनुक्रम्य, पुनरत्राव्रजेच्छुचिः ॥ 34॥

मनुष्य- जन्म मिलनेके पूर्व जितनी भी यातनाएँ हैं तथा शूकर- कूकरादि योनियोंके जितने कष्ट हैं, उन सबको क्रमसे भोगकर शुद्ध हो जानेपर वह फिर मनुष्ययोनिमें जन्म लेता है।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहं(म्)स्यां(म्) सं(म्)हितायां(न्) तृतीयस्कन्धे

कापिलेयोपाख्याने कर्मविपाको नामत्रिं(म्)शोऽध्यायः ॥

ॐ पूर्णमदः(फ्) पूर्णमिदं(म्)पूर्णात्पूर्णमुदच्यते

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः(श्)शान्तिः(श्)शान्तिः ॥